प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 14 * OCT 2007 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	Voice-96	*37*				दो समुद्र हैं : एक सत्-चित्-आनंद स्वरूप ब्रह्म एवं दूसरा असत्-जड़-दुःख रूप संसार	
2	Voice-97	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
3	Voice-98	*31*				दृष्टि सृष्टि सिद्धान्त - माया रूपी निद्रा जगत की माता है	
4	Voice-99	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
5	Voice-101	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
6	Voice-102	*45*				राम पुरुष व सीता छाया हैं पर दोनों अभिन्न हैं . श्री राम जय राम जय जय राम .	Imp
7	Voice-103	35				श्रेय एवं प्रेय सुख विवेचना	
8	Voice-104	52				ओंकार का स्वरूप निरूपण	1
9	Voice-105	34				जगदोत्पत्ति कारण के २ प्रकार → अज्ञान का परिणाम और ब्रह्म का विवर्त ..	
10	Voice-106	38				ओंकार का स्वरूप निरूपण	2
11	Voice-107	33				निर्गुण - सगुण स्वरूप भेद	a
12	Voice-108	28				ओंकार का स्वरूप निरूपण	3
13	Voice-109	34				निर्गुण - सगुण स्वरूप भेद	b
14	Voice-110	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
15	Voice-111	39				भगवान साक्षी निर्विकार निर्लेप व असंग है, अधिष्ठान ब्रह्म में जगत की उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय होती रहती है	
16	Voice-112	32				निर्गुण - सगुण स्वरूप भेद	c
17	Voice-113	35				प्रकृति और पुरुष दो पदार्थ हैं .. पुरुष द्रष्टा चेतन है व प्रकृति दृश्य जड़ दुःख रूप है .. सविस्तार देह रचना	
18	Voice-114	37				गीता १३/१-२ :: क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ विवेचना - हमारा स्वरूप यह शरीर नहीं अपितु द्रष्टा चेतन आत्मा है	
19	Voice-115	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
20	Voice-116	13				क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ विवेचना	